'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार–मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १३३ | वाराणसी, गुरुवार, १९ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रश्नोत्तर

गुलमर्ग (जम्मू-कश्मीर)१६-७-'५९

अनाज की कमी कैसे दूर होगी ?

प्रश्न : हिंदुस्तान में अनाज की कमी कब तक चलेगी ? अंग्रेजों के राज्य में तो इतनी कमी नहीं थी ?

विनोबाजी : गांधीजी बहुत बार रामराज्य की बात कहते थे। उसके मानी 'किंगडम आफ गॉड' है, तब तो दूसरी बात है। लेकिन हम पुराने राजा राम के राज्य की बात लें, तो उसके जमाने में आबादी ४ करोड़ ही थी। आज चालीस करोड़ हो गयी है। इसलिए आज हमारे सामने आर्थिक सवाल पेश हैं।

दूध बढ़ना जरूरी

हिंदुस्तान में औसत पाँच औंस दूध है, ऐसा माना जाता था। लेकिन श्रीदातारसिंहजी ने मुझसे कहा कि वह तो बँटवारे के पहले का औसत था। पाकिस्तान बनने के बाद यहाँ सिर्फ तीन औंस का औसत है। उस दूध में गाय, भैंस, बकरी आदि सबका दूध शामिल है। उसीमें से घी बनेगा, मिठाई बनेगी। मैंने राजस्थान के मुख्यमन्त्री से कहा था कि मेरे हाथ में राज्य होता तो मैं दूध की मिठाई बनाना गुनाह करार देता, क्योंकि दूध बच्चे, बीमार और बुढ्ढों के लिए है। उनके दूध का हिस्सा बर्फी बनाने में खत्म करना बिल्कुल इन्सानियत के खिलाफ है। आज किसान के बच्चे को दूध नहीं मिलता। अगर वह मजबूत न बना तो देश की पैदावार कैसे बढ़ेगी ? मनुष्य को जितना दूध मिलेगा, उतना अनाज कम लगेगा। इसलिए हिंदुस्तान में दूध बढ़ना चाहिए। दूध, घी, तेल मिले तो हिंदुस्तान में औसत सात छटाँक से ज्यादा अनाज की जरूरत नहीं है। कश्मीर के लोग जो चावल खाते हैं, वह देखकर ही मैं घबड़ा जाता हूँ। उनको दूसरा कुछ नहीं मिलता, इसीलिए इतना चावल खाना पड़ता है।

मनीक्राप की जरूरत न रहे

आज हिंदुस्तान में जो कपड़ा इस्तेमाल होता है, वह पहले से बहुत ज्यादा है। उसके लिए कपास बोने में ज्यादा जमीन देनी पड़ती है तो उतना अनाज कम पैदा होता है। तीसरी बात यह है कि आज हिन्दुस्तान की अच्छी से अच्छी जमीन तम्बाकू के लिए इस्तेमाल की जाती है। क्योंकि किसान को पैसे की जरूरत होती है। वह अनाज को छोड़कर कपड़ा वगैरह कुछ भी पैदा नहीं करता। इसलिए वे सारी चीजें खरीदने के लिए उसे मनीक्राप पैदा करना पड़ता है। अगर किसान अपनी जरूरत की चीजें खुद बना लेगा तो मनीक्राप की जरूरत नहीं रहेगी।

आज की तालीम जारी रही तो देश खतरे में

इन सब बातों की तरफ ध्यान देना होगा। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि आज की आपकी तालीम ऐसी है कि आपका पढ़ा-लिखा लड़का खेती करना चाहता ही नहीं, और अगर चाहे भी तो वह उसके काबिल नहीं रहता। क्योंकि उसे तालीम ऐसी दी गयी है, जिससे वह ठंड, धूप, बारिश सहन नहीं कर सकता। इसलिए आप तालीम का ढांचा नहीं बदलेंगे तो देश खतरे में है। मैं मानता हूँ कि जब तक आज की तालीम जारी रहेगी, तब तक अनाज की पैदावार खतरे में है। तब तक अनाज की कमी बनी रहेगी। आज हर किसान चाहता है कि मेरा लड़का पढ़े। उसके मानी है कि वह खेती छोड़े। इसलिए अगर आप अनाज की पैदावार बढ़ाना चाहते हैं तो आपको तालीम के ढंग में फर्क करना होगा। खेती की तालीम के लिए अंग्रेजी की क्या जरूरत है ? क्या इङ्गलैंड का लड़का खेती की तालीम फ्रेंच में लेता है ? आसमान में उड़ने के लिए अंग्रेजी की जरूरत है, लेकिन खेती के लिए कोई जरूरत नहीं।

अहिंसा की ताकत बनाने में अक्ल लगाओ

प्रश्न : हम तो अखलाक के कायल हैं, लेकिन एक जमात ऐसी है, जो कहती है कि खुदा है नहीं। उसे काबू में लाने के लिए हम क्या करें ?

विनोबाजी : गलत आदमी का मुकाबला कैसे करना, यह सवाल पुराने जमाने में था, आज है और आगे भी रहेगा। खुदा की कुदरत को हम महदूद नहीं कर सकते। पुराने जमाने में इस मसले को हल करने के लिए हथियार इस्तेमाल किये गये। वे इन्सान के हाथ में थे। लेकिन आज के ऐटम बम जैसे हथियार इन्सान के हाथ में नहीं हैं। इन्सान उनके हाथ में है। अगर ऐटम बम कसम खायेगा कि मैं खुदापरस्तों के हाथ में जाऊँगा, तब तो मैं उसे इस्तेमाल करने के लिए राजी हूँ।

www.vinoba.in

लेकिन वह जैसे मेरे हाथ में रहेगा, वैसे ही दूसरे के हाथ में भी जायगा। वह तो बेवकूफ है। इसलिए हमें दूसरी ताकत विकसित करनी होगी, जो अहिंसा की ही होगी। हिंसा की ताकत का विकास करने में आज तक कितने आलीमों ने, साइन्सदाँ ने और हुकूमत चलानेवालों ने अपनी अक्ल लगायी है, इसपर जरा गौर करो। अपनी उतनी सारी अक्ल हमें अहिंसा की ताकत बनाने में लगानी होगी।

हमारी लाचारी की अहिंसा

प्रश्न : हमारी इतनी दफा हार हो रही है कि उससे हम निराश हो जाते हैं। बापू ने हिन्दुस्तान को आजादी दिलायी, लेकिन फिर इन्सानियत बँट गयी।

विनोबाजी : हमें समझना चाहिए कि बापू ने जो काम किया, वह कंडीशन्ड था। उनके मन के मुआफिक नहीं हुआ। वे मजबूत की अहिंसा चाहते थे, लेकिन हमने कमजोर की अहिंसा चलायी। लाचारी से हमने अहिंसा का इस्तेमाल किया। हमारे हाथ का औजार तो बदला, लेकिन अन्दर की चीज नहीं बदली। इसलिए जैसे डाका डालने के समय डाकू मुत्तफिक होते हैं, लेकिन जहाँ बँटवारे का समय आता है, वहाँ उनमें झगड़ा शुरू होता है; वैसे ही आजादी हासिल होने के आसार दिखाई देते ही हममें 'तू-तू, मैं-मैं' शुरू हुई। इसलिए गांधीजी ने जो किया, उसमें अन्दर की चीज नहीं बनी। गांधीजी ने हमें सत्य और अहिंसा के लिए एक्सप्लाइट करना चाहा और हमने उन्हें स्वराज्य के लिए एक्सप्लाइट करना चाहा, इस तरह दो ठगों की बात चली। जब तक स्वराज्य हाथ में नहीं आया, तब तक हम उनके पीछे गये। लेकिन स्वराज्य हाथ में आते ही झगड़ा शुरू हुआ।

हिंदुस्तान का रुहानियत का मिशन

असली काम तो अब शुरू करना है। हिंदुस्तान में मुख्तलिफ जबानें, जमातें हैं, यह उसकी जीनत है। हिंदुस्तान कुल दुनिया का एक छोटा-सा नमूना है। इसलिए अब हमें 'जय जगत्' की बात करनी चाहिए। परमात्मा ने हिंदुस्तान के लिए रुहानियत का एक बहुत बड़ा मिशन रखा है। भूदान-यज्ञ की तरफ दुनिया की आँखें इसीलिए लगी हैं कि इसमें नयी ताकत बन रही है। कतल से और कानून से मसला हल होते हुए दुनिया ने देखा है। लेकिन अब वे करुणा और प्यार से मसला हल होते हुए देख रहे हैं। ईसामसीह ने तो कहा था कि तुम्हारे एक गाल पर कोई तमाचा मारे तो दूसरा गाल सामने करो और कोई तुम्हारा शर्ट माँग ले तो उसे कोट भी दे दो। लेकिन ईसाइयों ने नफरत पर जोर दिया और दुनिया को खत्म करने की कोशिश चलायी।

हिंदुस्तान की अपनी एक तहजीब है। यहाँपर आज कुछ थोड़े झगड़े चल रहे हैं, उन्हें अहमियत नहीं देनी चाहिए। समझना चाहिए कि ये छोटी बातें हैं। पंजाब को तक्सीम के समय इतना सहना पड़ा, फिर भी आज वहाँ गाना चलता है "ना कोई बैरी नाही बिगाना" दस साल पहले की बातें वे लोग भूल गये और आज प्रेम की बात करते हैं। मैंने सारा हिंदुस्तान घूम लिया है। मैंने देखा कि हिंदुस्तान की किसी भी कौम को दूसरी किसी कौम के लिए एक कौम की तौर पर नफरत नहीं है।

प्रश्न : अभी आपके खिलाफ कुछ लोगों ने प्रोपोगन्डा शुरू कर दिया है।

हक और सब्र से काम बनेगा

विनोबाजी : इससे मुझे खुशी होती है। सात-आठ साल से मेरी यात्रा चली तो सबने तारीफ ही तारीफ की। बाद में जब महाराष्ट्र और गुजरात में कुछ थोड़ी निन्दा शुरू हुई तो मुझे खुशी हुई। उसके बिना जिंदगी में जायका नहीं आता। मुझे ईसामसीह का एक जुमला याद आता है : 'ओ अन्दु यू ह्वेन आल शैल स्पीक वेल आफ यू।' साइंस के जमाने में एतबार एक बहुत बड़ी ताकत है। हम हमेशा एतबार ही रखते हैं। एतबार रखकर ही हम समझे कि जो हमारे खिलाफ बोलते हैं, उनके क्या विचार हैं। अगर वे हमारे बारे में गलत समझे हैं तो सब्र करना चाहिए। सब्र भी एक ताकत है। कुरानशरीफ में कहा है कि अगर हमारे साथ हक और सब्र है तो फिर हमें कोई नहीं जीत सकता। अगर हक हमारे साथ न हो तो सब्र से काम नहीं बनेगा। फिर हम सब्र दिखा भी नहीं सकेंगे।

प्रश्न : क्या ऐसा कोई है, जो नाहक को तस्लीम करेगा?

हक का दावा करने में इन्सानियत

विनोबाजी : इसके मानी यह है कि हर कोई हक को ट्रिब्यूट देता है। कभी यह समझाया जाय कि हक उसके साथ नहीं है तो उसी लमहे (क्षण) पर उसका झगड़ा खत्म हो जाता है। जो हक के दावे के साथ झगड़ा कर रहा है, उसे इतना ही समझाने का रह जाता है कि तेरे साथ हक नहीं है। अगर मैं हक की राह पर हूँ और दूसरा नाहक की राह पर है तो लड़ना ही पड़ेगा। लेकिन वह हक के साथ लड़ता है तो हमारे लिए अच्छा ही है। इन्सान लड़ते समय हक का दावा करता है, नाहक नहीं लड़ सकता—इसीमें इन्सानियत है। क्या कोई शेर आपपर हमला करेगा तो हक का दावा करेगा? कोई हक के साथ मुझसे लड़े तो या तो मैं उसे समझाऊँगा या वह मुझे समझायेगा। इसलिए वह मामला हृदय-परिवर्तन के स्तर पर आ जाता है। आज के जमाने में ऐटम बम डालनेवाले लोग इतने बेरहम नहीं हैं, जितने पुराने लोग थे। कुछ लोग कहते हैं कि उसमें कितनी बेरहमी है? लेकिन मैं कहता हूँ कि यह बेरहमी नहीं, बेअकली है। ऐटम बम फेंकना नॉन-मॉरल एक्शन है। तलवार लेकर किसीका गला काटने में जितना बेरहमी है, उतनी ऐटम बम फेंकने में नहीं है। ऐटम बम तो ठंडे दिमाग से और हिसाब के साथ डालना होता है। हमें सोचना है कि बुराई मेरे सामने या तो हक के दावे के साथ खड़ी होती है या हक के दावे के बगैर खड़ी होती है। अगर वह हक के दावे के साथ आती है तो मेरे लिए आसान हो जाता है। इसमें लड़ने का सवाल ही नहीं रहता, समझाने का ही सवाल रहता है। अगर वह हक के दावे के बगैर, नाहक आता है तो वह नाचीज है। इसलिए टिकनेवाली नहीं है, खत्म होनेवाली है। क्योंकि हक उसके साथ नहीं है। ● ● ●

www.vinoba.in

प्रश्नोत्तर

गुलमर्ग (जम्मू-कश्मीर) १७-७-'५९

नफरत का मुकाबला प्यार से

प्रश्न : आपने कहा था कि वैर से वैर पैदा होता है और मुहब्बत से मुहब्बत। लेकिन कश्मीर में तो वैर नहीं था, फिर भी उसपर हमला किया गया।

विनोबाजी : यह सिर्फ काश्मीर का ही मसला नहीं है, सारे हिन्दुस्तान का है। हिन्दू और मुसलमानों ने एक-दूसरे पर प्यार ही किया है। यह ठीक है कि एक बहाव था, जिसमें झगड़े पैदा हुए। लेकिन आज तक कितने हिन्दुओं ने मुसलमानों को कत्ल किया और कितने मुसलमानों ने हिन्दुओं को कत्ल किया? सारे झगड़े सियासत की वजह से पैदा होते हैं। हमें सोचना चाहिए कि सिर्फ वैर का न होना काफी नहीं है। 'पॉजिटिव लव' चाहिए। हिन्दुओं की तरफ से मुसलमानों पर और मुसलमानों की तरफ से हिन्दुओं पर 'पॉजिटिव लव' किया गया, ऐसा नहीं है। जहाँ नफरत का मुकाबला करना है, वहाँ उस किस्म का प्यार चाहिए। यह ठीक है कि यहाँके लोग इनोसेन्ट हैं, फिर भी उनपर हमला हुआ। लेकिन मान लीजिये, मेरे पाँव को आपने पीटा, क्योंकि मेरे हाथ ने आपको पीटा था तो पाँव यह शिकायत नहीं कर सकता कि मैंने तो कुछ नहीं किया था, फिर मुझे क्यों पीटा जा रहा है?

प्यार की ताकत बनाने के लिए तीन चीजों की जरूरत

प्रश्न : कश्मीर में हिन्दू, मुसलमानों ने एक-दूसरे को नहीं मारा।

विनोबाजी : आपकी यह बात मैंने मानी। इसीलिए मैंने पाँव की मिसाल दी। पाँव कश्मीर की जगह पर है, जो जिसम का जुज है। कश्मीर को जो भुगतना पड़ा, वह इसलिए कि कुल के गुनाह की वजह से जुज को भुगतना पड़ता है। जुज का ही गुनाह हो, यह जरूरी नहीं है।

बात यह है कि कश्मीर में हम एक ऐसी पॉजिटिव ताकत पैदा करें तो कुछ हो सकता है। उसके लिए तीन बातें करनी हैं: (१) प्यार से शख्सी मिलकियत मिटा दें तो एक ताकत बनेगी। (२) बैनुल अकवामी मैदान में एतबार रखा जाय। (३) कहीं मुकाबला करने का मौका आये तो हम भागें नहीं और मारें भी नहीं—यह तालीम लोगों को दी जाय। आज तो जैसे को तैसेवाली तालीम दी जाती है। यहाँ तक कि माँ-बाप को भी बच्चे को पीटने की नौबत आती है। जो बच्चा आपकी गोद में आया और आपकी हर बात मानने के लिए तैयार है, उसे भी आप पीटते हैं। इस तरह पीटने पर जो भरोसा है, वह छोड़ना चाहिए। मार-पीटकर बच्चों को कुछ बातें सिखाने की कोशिश चलती है, लेकिन उसमें हम बच्चों को कुछ अच्छी बातें सिखाते हैं तो उसके साथ यह भी सिखाते हैं कि पीटनेवाले की बात माननी चाहिए। याने दो आने कमाने के लिए हम दो रुपया खोते हैं। इस तरह हमारे मन में पीटने पर, सजा पर जो भरोसा है, उसे हटाना होगा। उसके मुताबिक तालीम में फर्क करना होगा। आज जो एतबार की बात चलती है, उसकी जगह पर सियासत में सामनेवाले पर एतबार करने की बात सीखनी होगी।

www.vinoba.in

एक बनो या मर मिटो

प्रश्न : वहाँका (पाकिस्तान का) मौजूदा माहौल क्या है?

विनोबाजी : वहाँके माहौल से हमें क्या करना है? यहाँ हम जमीन की मिलकियत मिटायें तो एक ताकत पैदा होगी। अभी मैंने एक जुमला पढ़ा कि 'स्पिरिच्युअल इज नाट टू बी कनफ्यूज्ड विथ रिलीजस, मारल ऑर इनटेलेक्च्यूअल' मैं इसके साथ पूरी तरह से सहमत हूँ। हमें रूहानी ताकत पैदा करने के काम में लगना होगा। उसमें चाहे ५० वर्ष भी लग जायँ, लेकिन हम वह नहीं करेंगे तो इन्सान खत्म हो जायगा। इन्सान के सामने आज दो ही पर्याय हैं, एक बनो या मर मिटो। अभी दुनिया में एक बॉड़ी ऐसी निकली है, जिसने प्यार से हमारा पानीवाला मसला कुछ हल किया है। हम दोनों एक-दूसरे के डर से फौज पर चार सौ करोड़ रुपया खर्च करते हैं, जिसकी वजह से दोनों मुल्क गरीबों को मदद नहीं दे सकते हैं और तरक्की का सारा काम रुका हुआ है। डर बढ़ रहा है और गुर्बत बढ़ती चली जा रही है। इतना सारा खर्चा हम प्यार के लिए क्यों न करें? लेकिन आज कोई ऐसी जबान बोले तो ऐब्जर्ड लगता है। लोग कहते हैं कि यह शख्स जानता नहीं कि दुनियादारी क्या चीज है। मेरे लिए लोग ऐसा ही बोलेंगे। यही बात कुरानशरीफ में आयी है: "जो भी फरिश्ता आता है, उसे लोग ढोंगी, पागल और मूरख समझते हैं।" ऐसे फरिश्तों को लोगों ने मूरख मानकर उनकी बात नहीं सुनी। कुरान में सिर्फ एक ही मिसाल है, जहाँ-पर लोगों ने रसूल की बात सुनी, वह है युनूस की। कहा गया है कि "अल्लाह ने यह करवाया, इसलिए हुआ। बाकी सब रसूलों का लोगों ने नहीं सुना।" आज भी, साइन्स के रहते हुए भी आप वही करेंगे तो कैसे चलेगा? साइन्स आपके सामने एक प्रश्नचिन्ह है। इस हालत में हमारे जैसे को मूरख समझकर आप लोग छोड़ देंगे तो दुनिया की पूरी तबाही होगी।

तालीम में फर्क जरूरी

हमें अमन, तशद्दुद की ताकत बनाने में लगना चाहिए। तशद्दुद की ताकत बनने में कितने साल लगे, इसपर जरा गौर कीजिये। अमन, तशद्दुद की ताकत तब बनेगी, जब इन्सान को यह यकीन हो जायगा कि उसीसे काम होगा। मनुस्मृति में कहा है "किसीको मारना, पीटना नहीं चाहिए, सिवा बच्चों को तालीम के वास्ते।" यह चीज आज भी चलेगी तो क्या हम दुनिया में टिकेंगे? मनु महाराज ने बड़ी मुहब्बत से यह लिखा है। जिनके लिए स्पेशल प्यार है, ऐसे बच्चों को छोड़कर और किसीको नहीं पीटना चाहिए, ऐसा कहा है। हमें समझना चाहिए कि साइन्स के जमाने में मारने-पीटने को कोई जगह नहीं मिल सकती। इसलिए हमें तालीम में फर्क करना चाहिए।

बैनुल अकवामी मैदान में एतबार जरूरी

बैनुल अकवामी मैदान में एतबार करके जरा देखो तो। अभी रूस कहने लगा है कि चंद दिन के लिए एटॉमिक टेस्ट नहीं करेंगे तो उसपर एतबार क्यों नहीं रखते हो? हम उसके लिए एतबार नहीं करेंगे तो वह भी हमारे लिए नहीं करेगा। फिर

मसला कैसे हल होगा ? आप हमें बदमाश समझेंगे, हम आपको बदमाश समझेंगे और फिर सुलह की बात करेंगे तो कैसे चलेगी ? फिर तो कोल्ड वार ही चलेगा। मैंने उसके लिए एक नया लब्ज निकाला है। मैं उसे 'हॉट पीस' कहता हूँ।

दीन और मजहब

मैंने यहाँ कदम रखते ही कहा था कि यहाँका मसला सियासी या मजहबी ढंग से हल नहीं होगा, रूहानियत से ही हल होगा। रूहानियत को मजहब से अलग करना पड़ता है। क्योंकि मजहब का एक ढाँचा बना है। रूहानियत ऐसी चीज है, जो ढाँचे में नहीं आ सकती। ढाँचा अच्छे मक़सद से बनाया हो तो भी उससे उलझनें पैदा होती हैं। मजहब के साथ छोटी-छोटी चीजें जुड़ी रहती हैं, जिससे मनुष्य जकड़ा जाता है। उसकी वजह से उसकी बुद्धि आजादी से सोच नहीं पाती। अरबी में जो "दीन" लफ्ज है, उसे मैं पसन्द करूँगा, "मजहब" लफ्ज को नहीं पसन्द करूँगा। कुरान में कहा है 'दीनुल हक'। दीन एक ही हो सकता है, मजहब कई हो सकते हैं। दीन याने हक। कुरानशरीफ में "उम्मुल किताब" की जो बात है, वह रूहानियत है। बाकी किताब में इन्टरप्रिटेशन के झगड़े होते हैं, उन सबके मानी क्या है, अल्लाह ही जानता है। मैंने कहा था कि रूहानियत से मॉरल्स को, अखलाक को भी हम अलग करते हैं। इसलिए कि मॉरल्स भी रिलेटिव्ह बने हुए हैं। कभी-कभी कहा जाता है कि अमन तशद्दुद के बचाव के लिए सत्य को छोड़ो। कभी कहा जाता है कि सत्य के बचाव के लिए अमन तशद्दुद को छोड़ो। इस तरह आजकल इतना रिलेटिव ईथिक्स चलता है।

इस तरह एक बाजू सच्चाई और दूसरी बाजू मुहब्बत को खड़ा किया जाता है। आज का जो ईथिक्स है, वह हैमलेट है। 'टु डु और नाट टु डु'। इस तरह आज का ईथिक्स सोचता है। आज का ईथिक्स क्वेश्चन-मार्क है, फुलस्टॉप नहीं। हमने रूहानियत को इन्टेलेक्च्यूअल से भी अलग माना है; क्योंकि उसमें तो पचासों झगड़े हैं। इसीलिए रिलीजस, मारल और इन्टेलेक्च्यूअल इन तीनों को छोड़कर स्पिरिच्यूअल लफ्ज को ही इस्तेमाल करना पड़ता है।

प्रश्न : गाँव का कुनबा बनाने का कश्मीर के मसले के साथ क्या ताल्लुक है ?

गाँव का कुनबा और दुनिया की सरकार

विनोबाजी : गाँव-गाँव का एक कुनबा बने और उन्हें जोड़नेवाली कड़ी कश्मीर हो। आइडियालॉजिकली कश्मीर एक हो, ऐसा मानने में बड़ा खतरा है। हम तो कहते हैं कि इधर गाँव का कुनबा रहेगा और दुनिया की सरकार। सिर्फ कश्मीर एक बने, ऐसा कहने में ही खतरा नहीं है, बल्कि एशियाटिक फेडरेशन बने, यह कहने में भी खतरा है। इसलिए हमें वर्ल्ड फेडरेशन की बात करनी चाहिए। आइडियालॉजीकली बोलना हो तो दुनिया एक बने, यह कहना होगा और प्रैक्टिकली बोलना हो तो गाँव का कुनबा बने, यह कहना होगा। जो प्रेक्टिकल सवाल है, उसे हल किया जा सकता है।

प्रश्न : क्या इसमें वक्त नहीं लगेगा ?

पैगम्बरों को अनपढ़ चेले मिले

विनोबाजी : क्या वक्त लगेगा ? आपके सामने साइन्स की डेमाक्लीस स्पीड खड़ी है। मैं जो कहता हूँ, वह अगर सही बात है तो हम लोगों को यह क्यों नहीं समझा सके हैं और अगर यह गलत बात है तो वह होनी ही नहीं चाहिए। मैं अपने तजुर्बे से कहता हूँ कि अनपढ़ लोगों को हम अपनी बात आसानी से समझा सकते हैं। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों को समझाने में मुश्किल मालूम होती है। क्योंकि अनपढ़ लोग बुनियादी इन्सानियत को पकड़ लेते हैं। उनके दिमाग सुलझे हुए हैं। इसलिए बड़े-बड़े पैगम्बरों को कौन शिष्य मिले, यह जरा देखो। मैं मानता हूँ कि छोटे-छोटे देहातवाले मेरी बात जल्दी समझेंगे। श्रीनगर आखिरी किला होगा।

साइन्स ऐक्शन, रुहानियत डायरेक्शन

प्रश्न : क्या रूहानियत और साइन्स का जोड़ है ?

विनोबाजी : बहुत जोड़ है। एक है डाइरेक्शन और दूसरा ऐक्शन, मोटिव फोर्स। आग की खोज के बाद आपके हाथ में एक ताकत आयी। अब आप आग से चूल्हा सुलगा सकते हैं और घर भी जला सकते हैं। इसलिए डाइरेक्शन देना रूहानियत का काम है। क्लोरोफार्म की खोज से दुनिया को कितनी राहत मिली ! इस तरह साइन्स को रूहानियत का डाइरेक्शन मिले तो दुनिया में बहिश्त आयेगा। साइन्स नॉनमॉरल है। उसकी रूहानियत के साथ कोई मुखालिफत नहीं है।

प्रश्न : आप गाँव को खुदकफील (स्वावलम्बी) बनाना चाहते हैं, लेकिन गाँव में कोई पढ़ा-लिखा न हो तो बच्चों को कौन पढ़ायेगा ?

परस्परावलम्बी स्वतन्त्रता

विनोबाजी : एक गाँव में पढ़ा-लिखा न हो तो नजदीकवाले गाँव से किसी पढ़े-लिखे शख्स को बुलाकर वहाँ बसाया जा सकता है। हमारा स्वावलम्बन का जो खयाल है, वह चीनी दार्शनिक लाओत्से जैसा नहीं है। हम चाहते हैं कि बैनुल अकवामी व्यवहार चलते रहें, लेकिन गाँव में जो बुनियादी चीजें बन सकती हैं, वे गाँव में ही बनें। बाहर से चीजें जरूर आयें, लेकिन हमारा बोझ दूसरों पर कम-से-कम पड़े। हम यह नहीं कहते कि हम दुनिया को मदद न करें या दुनिया से मदद न लें। बल्कि इतना ही कहते हैं कि बुनियादी जरूरियातें उसी जगह पैदा करने की कोशिश हो। नहीं पैदा होती तो पड़ोस से लायी जायँ। इस तरह हमारा इन्टर-डिपेन्डेन्ट इन्डिपेन्डेन्स (परस्परावलंबी स्वतन्त्रता) है। इसमें विसंगति आ सकती है। लेकिन यह दो अलफाज बताकर ही हमारा विचार बताया जा सकता है। ● ● ●

१. अनाज की कमी कैसे दूर होगी ?
गुलमर्ग १६ जुलाई '५९ पृष्ठ ७७९

२. नफरत का मुकाबला प्यार से
गुलमर्ग १७ जुलाई '५९ ,, ७८१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in